

>

Title: Need to provide good quality cotton seeds and chemical fertilizers to the farmers in the country.

श्री नारनभाई कछाड़िया (अमरेली): महोदय, मुझे यहां से बोलने की परमीशन दी जाये।

बहुत-बहुत धन्यवाद, महोदय, आपने मुझे शून्य काल में एक महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का मौका दिया। आज पूरे देश में कॉटन की खेती अच्छी तरह से हो रही है। किसानों की मेहनत बराबर रंग ला रही है, क्योंकि आज किसान ईमानदारीपूर्वक खेत में मेहनत कर रहे हैं और उनकी मेहनत सफल भी हो रही है। परिणामतः आज कॉटन का उत्पादन भी अच्छा हो रहा है। किसान अपने कॉटन का उत्पादन लहलहाते हुए देखकर बहुत खुश हो रहा है, लेकिन बहुत दुख की बात यह है कि जब किसान कॉटन का भाव बाजार में सुनता है तो उसकी आत्मा अन्दर से कांप उठती है और वह फूट-फूट कर रो पड़ता है। इसके कारण बहुत से किसानों ने आज आत्महत्या भी कर ली है। यह बात सत्य है कि मैं भी एक किसान परिवार से आता हूँ। मुझे भी यह पता है कि यह भाव उनके बीज और खाद की कीमत के लिए भी बहुत नहीं है, उनकी मजदूरी भी बराबर नहीं मिलती है। बहुत से किसान तो भाव सुनकर ही आत्महत्या कर लेते हैं।

मैं आपके माध्यम से कृषि मंत्री जी को यह बताना चाहूँगा कि अगले जून महीने में मानसून का समय आने वाला है और किसान वर्षण देव की पूजा करके इस बार भी अच्छी बारिश हो, इसके लिए वह पूजा कर रहा है। यह बहुत इम्पोर्टेंट प्ब्लम है कि अभी बाजार में जो हो रहा है, वह मैं कृषि मंत्री जी निकल गये, अभी आधे घण्टे कृषि पर चर्चा हो रही थी, वही मेरा पाइंट है, लेकिन यहां एक दूसरी बड़े दुख की बात है कि आज किसान को बाजार में सही बीज नहीं मिल पा रहा है। जिस गुणवत्ता वाला बीज किसानों को चाहिए, वह बाजार में उपलब्ध नहीं है और बीज कालाबाजार में मिल रहा है। साथ ही साथ पूरे बाजार में निकली बीज का काला धन्धा हो रहा है और आज किसान को कॉटन का सर्टिफाइड बीज नहीं मिल पा रहा है। यह कृषि मंत्रालय के लिए शर्मनाक घटना है। यह केन्द्र सरकार और कृषि मंत्रालय की नाक कटने के बराबर है।

19.00 hrs.

यह सरकार किसानों को पर्याप्त मात्रा में सही बीज और समय पर खाद उपलब्ध नहीं करा पा रही है। जो किसान दिन-रात पसीना बहाकर खेती करता है, यदि आज उन्हें समय पर खाद और सही बीज नहीं मिले तो देश में ऐसी सरकार रहने या न रहने का कोई अर्थ नहीं है।

महोदय, मैं आपके माध्यम से कृषि मंत्रालय से निवेदन करना चाहता हूँ कि मानसून का समय आने वाला है और मानसून से पहले ही किसानों की मदद के लिए यदि कृषि मंत्रालय एक केंद्रीय टीम भेजे, राज्यों के सभी जिलों में निगरानी करे तो शायद इस प्रकार की समस्या उत्पन्न नहीं होगी।